दक्षिणी मुद्रण वर्ग

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

हैदराबाद

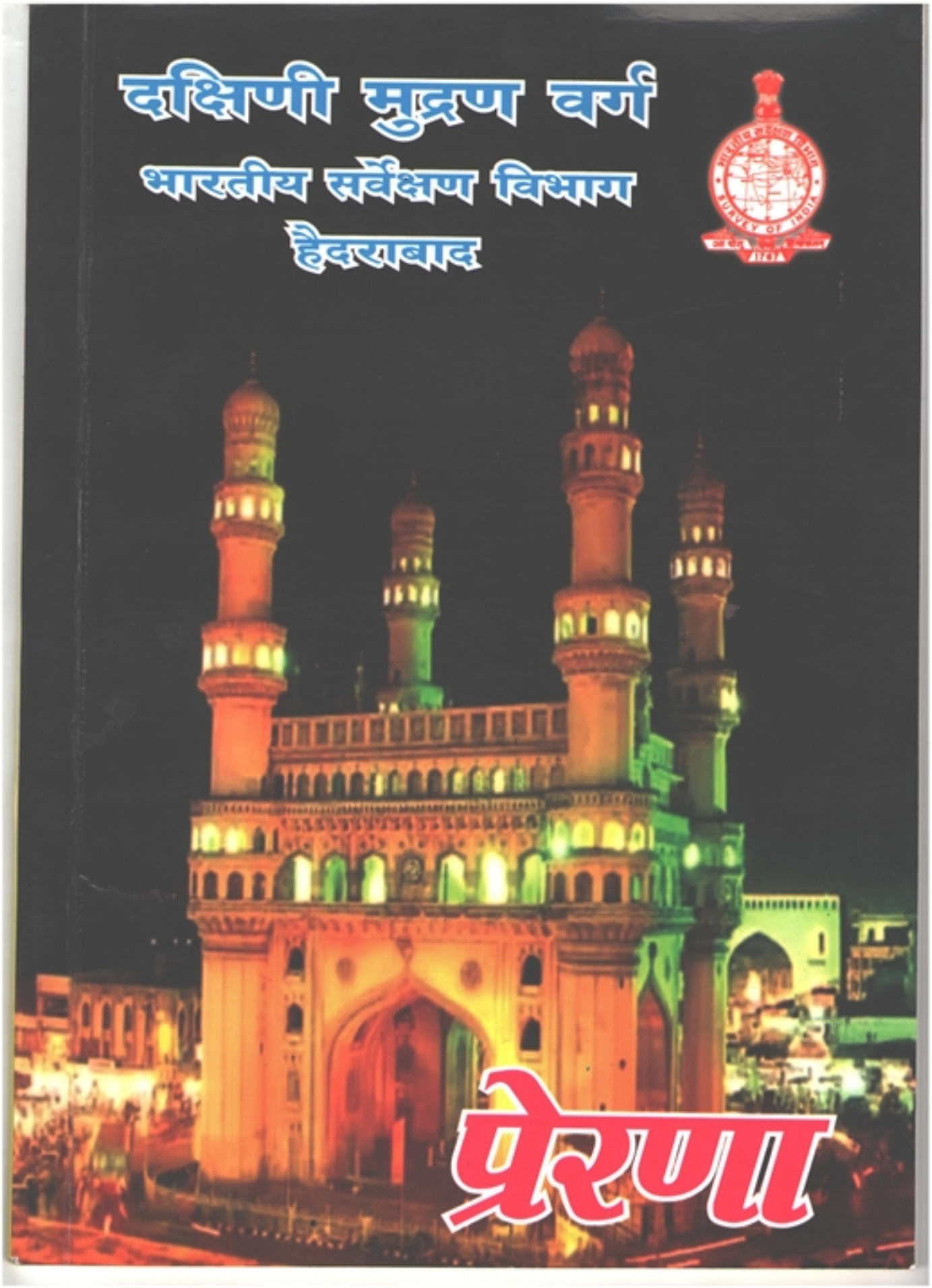

प्रेरणा

प्रेरणा 2014

संरक्षक

श्री जोय कोनगाड़ी, निदेशक

संयोजक

श्री.बी.के.सुरेश, प्रबंधक (कनिष्ठ)

संपादक

श्री मनोज कुमार खण्डेलवाल, कर्मशाला प्रबंधक

श्री रामकृष्ण मोरे, आर्टीफिसर

मुद्रण

श्री अमित अधिकारी, प्रबंधक (कनिष्ठ)

श्री पी.कुमार, सहायक प्रबंधक

श्री के हनुमंतराव, सहायक प्रबंधक

श्री जे. सुधाकर राव, सहायक प्रबंधक

डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव
Dr. SWARNA SUBBA RAO

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबड़काला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं० 37,
देहरादून- 248001 (उत्तराखण्ड) भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office,
Hathibarkala Estate, Post Box No -37
Dehradun-248001, (Uttarakhand) India

संदेश

मेरे लिए यह अपार हर्ष का विषय है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग, दक्षिणी मुद्रण वर्ग, हैदराबाद द्वारा गृह पत्रिका 'प्रेरणा' का प्रकाशन किया जा रहा है ।

भाषा और संस्कृति का राष्ट्र की उन्नति में विशेष योगदान होता है । भाषा से ही किसी राष्ट्र एवं प्रांत की पहचान होती है। भाषा के द्वारा ही लोग एक दूसरे के निकट आ सकते हैं । भारत एक बहुभाषीय देश है और समस्त भाषाएं इस देश की बहुरंगी संस्कृति व सभ्यता की परिचायक एवं संवाहिका है । इन सभी भाषाओं के बीच एक राष्ट्रव्यापी संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का अत्यधिक महत्व है ।

पत्रिका के माध्यम से आप सभी से अनुरोध है कि हिन्दी भाषा का प्रयोग कार्यालयीन कामकाज एवं दैनिक व्यवहार में अधिक से अधिक करें तथा इसके प्रचार-प्रसार में खुले दिल से अपना सहयोग प्रदान करें ताकि हिन्दी को अपना गौरव स्थान प्राप्त हो ।

मैं पत्रिका से जुड़े उन सभी अधिकारियों /कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूं जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से पत्रिका को अंतिम रूप दिया है ।

(डॉ0 स्वर्ण सुब्बा राव)
भारत के महासर्वेक्षक

Tel: 00-91-135-2744268 / 2747051-58 Extn. 4350 E-mail sgo@sancharnet.in Fax 00-91-135-2744268, 2744064

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

निदेशक का कार्यालय
Office of the Director
दक्षिणी मुद्रण वर्ग
Southern Printing Group
उप्पल, हैदराबाद
Uppal, Hyderabad-500 039(A.P.)

सन्देश

प्रिय साथियों,

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, दक्षिणी मुद्रण वर्ग के कर्मठ एवं प्रतिभाशाली रचनाकारों की हिन्दी के प्रति जागरूकता की प्रतीक वार्षिक पत्रिका प्रेरणा के इस अंक को प्रकाशित करने में मुझे अपार आनन्द की अनुभूति हो रही है ।

सर्वविदित है कि राजभाषा हिन्दी सरल, सुबोध व सुग्राह्य है और अपनी शैलीगत विशेषताओं की वजह से यह विश्व स्तर पर फल फूल रही है । आज न केवल भारत में बल्कि पूर्ण विश्व में भारत का गुण गान हो रहा है । यही कारण है कि प्रत्येक 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन पूर्ण विश्व में किया जाता है ।

हिन्दी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम सभी यह प्रण लें कि हम अपनी राजभाषा हिन्दी के संबंध में संवैधानिक अनिवार्यताओं का अंतः करण से पालन करते हुए अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करेंगे ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन में सहयोगी सभी रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

जय हिन्द

जोय कोनगाड़ी

(जोय कोनगाड़ी)
निदेशक
दक्षिणी मुद्रण वर्ग

हैदराबाद : 14 सितम्बर 2014.

सम्पादकीय

भगवान की दी हुई अक्ल को चतुराई से उपयोग करना इंसानी फितरत है । इस चतुराईपूर्ण उपयोग के द्वारा उसने न केवल प्रकृति पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का अभियान छेड़ रखा है, वरन् पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणियों पर अपना दबदबा कायम कर लिया है । उस के इस प्रभाव क्षेत्र का विस्तार पृथ्वी तक ही सीमित नही, बल्कि पृथ्वी के नीचे समुद्र तल में तथा पृथ्वी के ऊपर आकाश में व आकाश से भी ऊपर अन्य ग्रन्हों व लोक लोकान्तरों में फैलता जा रहा है । इसी बुद्धि बल का उपयोग करते हुये हम सभी बदलती परिस्थितियों और बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने में जुटे हैं । अपने अंदर की ऊर्जा शक्ति को पहचानकर अपने अंतर्कौशल को जगाना होगा ताकि हमारा देश प्रगतिशील रास्ते पर अग्रसर हो सके । इंसान की अक्ल की सीमायें कौन जानता है ? विद्वान, वैज्ञानिकों का आज भी यह मत है कि इंसान ने अपनी अक्ल के केवल दस-बारह प्रतिशत भाग का ही उपयोग किया है । इंसानी अक्ल के अथाह भंडार तथा इसके इस्तेमाल से हो रही नित नई खोजों की रफ्तार तेज हुई है । इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों की कर्तव्यनिष्ठा के प्रति सराहना करते हुये अपेक्षा रखते हैं कि भविष्य में भी यही सहयोग मिलता रहेगा ।

संपादक मंडली

गांधीजी के विचार

"सभी लोकसेवकों की अपेक्षा, मैं शायद सारे देश में ज्यादा घूमा फिरा हूँ और पढ़े-लिखे व अनपढों को मिलाकर सब से ज्यादा लोगों से मिला हूँ और मैं सोच समझ कर इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि राष्ट्र का कारोबार चलाने के लिए व विचार विनिमय के लिये हिन्दी को छोड़कर दूसरी कोई भाषा शायद ही राष्ट्रीय माध्यम बन सके।"

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक का नाम	पृष्ठ सं
01	गीता सार	नीलावति	01
02	भारत माता की महिमा	एम. वेंकटरमणा	02
03	प्रेम का महत्व	मनोज कुमार खण्डेलवाल	03
04	कुछ बातें काम की	दीपक नवलखे	04
05	जय भारत जय हिंदी भाषा	टी.एन. वाटेकर	05
06	उम्र का तगाजा	बी.के.सुरेश	06
07	जीवन का विकास	विजय हनवते	07
08	भारत की नारीशक्ति	सुस्मिता देव	10
09	राष्ट्रनाश के कारण	विजय हनवते	12
10	आरोग्य और आनंद के लिए मंत्र	डी. शारदा	13
11	स्वार्थ रहित किसान	एस.वी. सूर्यकुमारी	14
12	काला बाजारी	एम.जी.बदकी	15
13	वैराग्य	विजय हनवते	16
14	समय की माप	एम. रामकृष्णा	19
15	के.बी.ए. मशीन	पी. कुमार	20
16	चुटकुले	महेश्वर साहू	21
17	शास्त्रों की प्रामाणिकता	ए. साईबाबा	22
18	महाभारत की सेना	एन. बहादुर	23
19	पृथ्वी का आयुष्य	वी.एस.वी.एस. उमामहेश्वर राव	24
20	देखो आयी होली रे	बी.के. धवने	25
21	समानार्थी शब्दावली	एम.जी.बदकी	26
22	परिवेश सुरक्षा	महेश्वर साहू	27
23	सफलता - सूत्र	एम. रामकृष्णा	28
24	नारियों के अधिकार व कर्तव्य	ए. साईबाबा	30
25	शाकाहार ही क्यों?	बी.एस.एस.शास्त्री	32
26	आहार	एल.वी.एस.राजू के.	33
27	दाग कफन में	ए. साई बाबा	34
28	क्या आप जानते हैं?	टी.एन.वाटेकर	35
29	स्वदेशी से स्वावलम्बी भारत	बी.नन्द कुमारी	36
30	धर्म	एल.वी.एस.राजू के.	37
31	पिता का कर्तव्य	कुमार स्वामी	38
32	जीवन की सीख	एम. वेंकटरमणा	39
33	नशों के व्यापारी लाखों निर्दोष लोगों की मौत के गुनहगार	जी.वी.एस.धनलक्ष्मी	40
34	कविताएँ	टी.एन.वाटेकर	41
35	चिन्ता	एम.जी.बदकी	42
36	भारत के राष्ट्रीय प्रतीक	एम. रामय्या	43
37	कोशिश करें	अमित अधिकारी	44

गीता सार

नीलावति
वरिष्ठ पुनरुत्पादक, द.मु.व.

1. क्यों व्यर्थ चिंता करते हो ? किससे व्यर्थ डरते हो ? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है न मरती है ।
2. जो हुआ वह अच्छा हुआ । जो हो रहा है वह अच्छा हो रहा है । तुम भूत का और भविष्य का पश्चाताप, चिन्ता न करो । वर्तमान चल रहा है ।
3. तुम्हारा क्या गया; जो तुम रोते हो; तुम क्या लाये थे; जो तुमने खो दिया; तुमने क्या पैदा किया था; जो नाश हो गया । न तुम कुछ लाए; जो लिया यहीं से लिया, जो दिया यहीं पर दिया । जो लिया इसी भगवान से लिया, जो दिया इसी को दिया । खाली हाथ आए, खाली हाथ चले । जो आज तुम्हारा है कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा तुम इसे अपना समझकर मगन हो रहे हो । बस यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःखों का कारण है ।
4. परिवर्तन संसार का नियम है । जिसे तुम मृत्यु समझते हो वही जीवन है । एक क्षण में तुम करोड़ों के मालिक बन जाते हो, दूसरे क्षण में दरिद्र हो जाते हो । मेरा-तेरा, छोटा बड़ा, अपना-पराया मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सब के हो ।
5. न यह शरीर तुम्हारा है; न तुम शरीर के हो । यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा । परन्तु आत्मा स्थिर है, फिर तुम क्या हो ।
6. तुम अपने आप को भगवान को अर्पित करो । यही सबसे उत्तम सहारा है, जो उसके सहारे को जानता है वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त है
7. जो कुछ भी तुम करते हो इसे भगवान को अर्पण करते चलो ऐसा करने से तुम सदा जीवन-मुक्ति, आनंद अनुभव करोगे ।

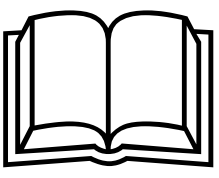

भारत माता की महिमा

एम. वेंकटरमणा
एल.एम.पी. ग्रेड-II, द.मु.व.

हमें हमारी जन्मभूमि पर - कितना गर्व महान है ।
आओ इसकी महिमा जाने - कैसा ये हिन्दुस्तान है ।।

मुकुट मणि कश्मीर सुहरा - मस्तक इसकी शान है ।
रक्षक बनकर खड़ा हिमालय - जाने इसे जहान है ।।

हृदय भाग को अच्छादित - करती है गंगा पावन ।
इसकी महिमा सभी जानते - तीर्थ पाप नसावन ।।

झेलम, सतलज, रावी बहती - व्यास, चिनाव की धारा ।
इनसे है पंजाब सुशोभित - लगता प्यारा - प्यारा ।।

धारों री धरती रो प्यारो - सुंदर राजस्थान है ।
बीर बांकुरे जन्में इसमें - महिमा बड़ी महान है ।।

वीर शहीदों की माटी को - हर प्राणी ने नमन किया ।
भारत की पावन भूमि पर - राम कृष्ण ने जन्म लिया ।।

सोमनाथ और काशी मथुरा - ताज महल सा ताज कहाँ ।
वैष्णों देवी, जगन्नाथ, श्री नाथ सरीका धाम कहाँ ।।

पश्चिमी तट, भारत का है जो - प्रवेश द्वार कहलाता है ।
दुनिया में मशहूर द्वारिका - धाम से जाना जाता है ।।

हिन्द महासागर चरणों को - धोता है निशि वासर ।
सर्व धर्म सम्पन्न राष्ट्र है - हमें नाज है इस पर ।।

शान्ति का प्रतीक देश - गुणगान इसी के गाता हूँ ।
अमर राष्ट्र की यह गाथा - जन जन हो आज सुनाता हूँ ।।

मातृ भूमि यह, पुण्य भूमि - इसको मैं शीश झुकाता हूँ ।
बुद्ध, भूमि, यह कर्म भूमि - इसकी जयकार लगाता हूँ ।।

प्रेम का महत्व

मनोज कुमार खण्डेलवाल
कर्मशाला प्रबंधक, द.मु.व.

वर्षा की फुहारों से धरती में अनेक पौधे फूट पड़े । दुर्भाग्य से सभी पौधे आपस में ही लड़ पड़े और उनमे से हरेक अपने को ज्यादा महत्वपूर्ण व उपयोगी बताने लगा । विवाद बढ़ता गया और छः माह ऐसे ही लड़ते झगडते व्यतीत हो गए । जब ज्येष्ठ माह का आगमन हुआ, तो उसके ताप से सारे पौधे सूख गए और जब बिछड़ने की घड़ी आथी तो उन्हें अनुभव हुआ कि उन्होंने पूरी उम्र यूँ ही लड़ने झगड़ने में व्यतीत कर दी ।

दुःखी पौधों ने संकल्प लिया कि यदि पुनः अवसर मिला तो वे प्रेम पूर्वक रहेंगे । तब से पौधे हंसते-खेलते, सहयोग-सहकार की भावना से रहते हैं । मात्र इंसान ही है, जो इस छोटी सी बात को समझ नहीं पाया है । किसी ने सच ही कहा है, कि

छोटी-सी है जिंदगी, तकरार किस लिए,
रहती है दिलों में, ये दीवार किस लिए,
है साथ कुछ दिनों का, फिर सब जुदा-जुदा,
तो राहों में हम बिछाएँ, खार किस लिए ।।

कुछ बातें काम की

दीपक नवलखे
तकनीकी श्रमिक, द.मु.व.

1. अमरूद का सेवन पेट से संबंधित समस्याओं का समाधान करता है ।
2. खजूर का सेवन शरीर को दृढ़ता प्रदान करने के साथ-साथ कमर दर्द की समस्या का भी समाधान करता है ।
3. हरे धनिए का सेवन स्तन व लीवर कैंसर जैसे गंभीर रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करता है ।
4. अनार का सेवन जीभ की समस्या का समाधान करता है ।
5. लहसुन का सेवन गैस की समस्या का समाधान करता है ।
6. भोजन के उपरांत एक कच्चे प्याज का नियमित सेवन कब्ज के रोगी को स्वस्थ बनाता है ।
7. कलौंजी का सेवन या फिर इसका पेट पर लेप करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं ।
8. पुदीने का प्रयोग महिलाओं का स्तन कैंसर से बचाव करता है ।
9. जामुन का सेवन मूत्र मार्ग के संक्रमण की समस्या का समाधान करता है ।

जय भारत जय हिंदी भाषा

टी.एन. वाटेकर
तकनीकी श्रमिक, द.मु.व.

जय भारत जय हिंदी भाषा,
जय जय जय गण की आशा ।।
स्वाभिमान का संबंध है यह,
गरिमामय है हिंदी भाषा ।।
विश्व बंधुला की धोतक है,
समतामय है हिंदी भाषा ।।
राष्ट्र एकता का आराधन,
महिमामय है हिंदी भाषा ।।
कोटि-कोटि कंठों से मुखरित,
क्षमतामय है हिंदी भाषा ।।
नवरस रत्न सजे अंचल में,
ममतामय है हिंदी भाषा ।।
राग भरा अनुराग भरा है,
करूणामय है हिंदी भाषा ।।
तत्सम तद्भव देश विदेशी,
सरितामय है हिंदी भाषा ।।
ज्ञान और विज्ञानमयी है,
सुर गति लय है हिंदी भाषा ।।

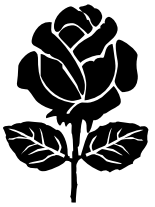

हँसना मना है ।

पिता अपने बेटे से - पड़ोस की लड़की को देख, वह परीक्षा में फर्स्ट आई है ।
बेटा - मैं उसकों ही देखता रहता था तभी तो फेल हो गया ।

टीचर -बेटा बंटी, बताओ एक को एक से कैसे जोडें कि तीन हो जाए ?
बंटी - इतनी सी बात, उनकी शादी करा दीजिये ।

उम्र का तगाजा

बी.के.सुरेश
प्रबंधक (कनिष्ठ), द.मु.व.

उम्र बीती है कुछ करने की यहाँ,
यू हीं उसे न गवांना मेरे भाई ।
जो काम कब करना चाहिए,
वही काम समय पर हमें करना ।।
बचपन में हँसते खेलते गुजरे,
जीवन का अर्थ हमें है समझाना ।
भोजन जीवन का सुख देगा,
समझदारी से उसे पार करना ।।
बोझ जीवन का उठाना होता है,
कर्तव्य निष्ठा हमें हैं करना ।
जिन चीजों से मिली हैं खुशियाँ,
उसको करना कभी न भूलना ।।
वक्त बदलता है बुरा वक्त भी आता,
संवाद करके उससे पार लेना ।
यूं ही घबराए बैठे रहने से,
पड़ेगा जीवन से हाथ धोना ।।
जो अपना है उसमें ही खुश रहना,
ख्वाम ख्वाह बुरी आदतें न डालना ।
आज अपना ही है खुशी से रहना,
कल को ऊपर वाले को सौप देना ।।

जीवन का विकास

विजय हनवते
वरिष्ठ पुनरुत्पादक, द.मु.व.

यह बात सभी जानते हैं कि खरे सोने की कीमत बहुत होती है, पर मिलावटी सोने की कीमत घट जाती है । जितनी मात्रा में मिलावट होती है, उसकी कीमत उतनी ही मात्रा में घटती चली जाती है । मिलावट वह कारण है, जिसकी वजह से शुद्ध धातु की कीमत कम हो जाती है । सोने से बने हुए गहने व जेवरात में तो थोड़ी मिलावट होती ही है, ताकि गहने मजबूत, टिकाऊ व सुंदर आकार में ढाले जा सकें, पर वे भी कीमत खोते हैं । खरे सोने के छोटे से टुकड़े को भी लोग संभालकर तिजोरी में रखते हैं कि कहीं वह खो न जाए या वह किसी दूसरे के हाथ में न पड़ जाए । ठीक इसी तरह यदि मनुष्य का जीवन, उसका व्यक्तित्व खरा (परिष्कृत) हो जाए तो उसकी कीमत अधिक ही नहीं, बल्कि अमूल्य हो जाती है ।

मनुष्य के व्यक्तित्व में गुण व अवगुणों की मिलावट के कारण उसके जीवन की कीमत स्वयं उसके नजरों में न के बराबर हो जाती है । चित्त में जमे हुए जन्म-जन्मांतरों के कुसंस्कारों के कारण व्यक्ति की अंतर्चेतना पर आवरणों की परत चढ़ती चली जाती है, फिर जीवन की खूबसूरती व प्रकाश दिखाई नहीं देता और न उसका अनुभव होता है, केवल बाहरी आवरण ही दिखाई पड़ते हैं ।

जिस तरह अशुद्ध सोने को भट्ठी में गलाने से उसकी अशुद्धि पिघलकर बाहर निकल जाती हैं और भट्ठी में केवल शुद्ध सोना बचता है, ठीक उसी प्रकार प्रकृति व परमेश्वर की आराधना से हर क्षण मनुष्य जीवन की अशुद्ध विकृतियां, कुसंस्कार धुलते चले जाते हैं । यद्यपि मनुष्य मिलने वाले इन कष्टों से दूर भागना चाहता है, उनका सामना नहीं

करना चाहता क्योंकि इनका सामना करने पर उसे कष्ट होता है, फिर भी यदि उसे अपने जीवन को निखारना है तो इन परिस्थितियों का सामना तो उसे करना ही पड़ेगा ।

यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में कष्टों का सामना न करे, विपरीत परिस्थितियों के सामने अपने पांव पीछे हटा ले, ऐसे में न तो उसके व्यक्तित्व का विकास हो पाएगा और न ही वह अपनी कीमत व अपनी क्षमताओं से परिचित हो पाएगा । हमारे ऋषी-मुनियों ने यहां, तक कहा है कि यदि आपके पास कठिन परिस्थितियां नहीं हैं तो आप उन्हें आमंत्रित कीजिए, उनका निर्माण कीजिए, उनका सामना कीजिए और उनसे भयभीत बिलकुल भी न होइए, बल्कि साहस के साथ उनका मुकाबला कीजिए ।

कठिन परिस्थितियों के बीच से स्वयं को गुजारना तपस्या है और इसके माध्यम से व्यक्तित्व के परिष्कार की गति बहुत तेज होती है । इसलिए प्राचीन समय से लेकर आज तक प्रायः सभी ऋषी-मुनि जंगलो में जाकर तप करते हैं, कठिन परिस्थितियों में जीवन जीते हैं । जीवन के कष्टों को सहते हैं । परमेश्वर का ध्यान, चिंतन-मनन करते हैं और साधारण जीवन जीते हैं । लंबे समय तक ऐसा करने से मनोवांछित साधना की सिद्धि प्राप्त होती है व निष्काम भाव होने पर जीवन प्रकाशित हो जाता है ।

तप के संदर्भ में आचार्य श्रीराम शर्मा का कहना है कि 'प्रकृति का नियम है कि संघर्ष से तेजी आती है । रगड़-और घर्षण यद्यपि देखने में कठोर कर्म प्रतीत होते हैं, पर उन्हीं के द्वारा सौंदर्य का प्रकाश होता है । जीवन वही निखरता है, जो कष्ट और कठिनाइयों से टकराता रहता है । विपत्ति, बाधा और कठिनाइयों से जो लड़ सकता है, प्रतिकूल परिस्थितियों से युद्ध करने का जिसमें साहस है, उसे ही, सिर्फ उसे-ही 'जीवन विकास' का सच्चा सुख मिलता है । आज तक इस पृथ्वी पर एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ, जिसने बिना कठिनाई उठाए, बिना जोखिम ओढ़े, कोई बड़ी सफलता प्राप्त कर ली हो । कष्टमय जीवन के लिए अपने आप को खुशी-खुशी प्रस्तुत करना, यही तप का मूल तत्व है । तपस्वी लोग ही अपनी तपस्या से इंद्र का सिंहासन जीतने में और भगवान का

आसन हिला देने में समर्थ हुए हैं । मनोवांछित परिस्थितियां प्राप्त करने का संसार में एकमात्र साधन तपस्या ही है । स्मरण रखिए सिर्फ वे ही व्यक्ति इस संसार में महत्व प्राप्त करते हैं, जो कठिनाइयों के बीच हंसना जानते हैं, जो तपस्या को आनंद मानते हैं । इस तरह कष्ट-कठिनाइयां जीवन में उपहार हैं, जो जीवन को निखारने के लिए आते हैं । इन कठिन परिस्थितियों से गुजरने पर ही हम अपने 'जीवन विकास' की ओर कदम दर कदम बढ़ते जाते हैं । यद्यपि इन परिस्थितियों से गुजरने में हमें मानसिक तनाव व शारीरिक थकान होती है, भावनाओं में उथल-पुथल होती है, मन में असमंजस, दबाव व घबराहट होती है, लेकिन इन मार्गो से गुजरना ही एकमात्र रास्ता होता है और इन परिस्थितियों में हमें सहारा देता है, मदद करता है भगवान का नाम, भगवान का स्मरण और भावभरी प्रार्थना । कठिन परिस्थितियों में आंतरिक ढाढ़स व सहायता पहुचाने वाले ये ही वे तत्त्व हैं, जो हमारी मदद करते हैं ।

अतः हमें अपनी जीवनशैली में कठोर परिश्रम करना चाहिए, मानसिक श्रम करना चाहिए । जीवन को सुव्यवस्थित करना चाहिए और इसमें प्राप्त पूजा-पाठ, ध्यान, जप आदि के लिए समय निर्धारित करना चाहिए । इसके अतिरिक्त बचे हुए समय में कुछ ऐसे कार्य करते रहना चाहिए, जिनका सामना करने से हम घबराते हैं ।

यह बात सदैव ध्यान रखनी चाहिए कि कोई इस संसार में जन्म से सीख कर नहीं आता । वह अभ्यास करता है और यहीं सीखता है । इस कर्मफल के अकाट्य सिद्धांत, पर भरोसा करते हुए अपनी योग्यता का विकास सतत् करते रहना चाहिए और इसलिए कठिन चुनौतियों को स्वीकारने में हिचकना नहीं चाहिए, यही व्यक्तित्व परिष्कार का एकमात्र मार्ग है ।

भारत की नारीशक्ति

सुस्मिता देव
अवर श्रेणी लिपिक, द.मु.व.

स्वामी विवेकानंद के जीवन की एक घटना है । अमेरिका में उनसे पूछा गया, स्त्री विषयक हमारा भाव तथा भारतीयों के भावों में क्या अंतर है स्वामी जी का उत्तर था, भारत में अपनी पत्नी के सिवाय सभी स्त्रियों को माता रूप में माना जाता हैं, तो पाश्चात्यों में अपनी जन्म दामिनी मां को छोड़ सभी महिलाए पत्नीरूप मानी जाती हैं । विवेकानंद के इन शब्दों में कुछ भारतीय लोगों को अतिशयोक्ति का अनुभव होता है किन्तु दोनो देशों में विवाह के जो नियम तथा रीतिरिवाज हैं उनके अनुसार स्वामीजी का यह कथन, स्त्री के विषय में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियों का अंतर सरल और स्पष्ट भाषा में बताता है। स्त्री को सृष्टि की सृजनशक्ति के रूप में भारतीय देखते हैं । किन्तु 'मातृशक्ति' का गहराई से अध्ययन न किये हुए पाश्चात्य जगत में उसको उपभोग की वस्तु मानते रहे हैं ।

सोलहवीं शताब्दी में पाश्चात्य देशो ने विश्वभर में अपने साम्राज्य निर्माण करने के प्रयत्न प्रारंभ किये फलस्वरूप साम्राज्य के साथ पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भी विश्वभर में फैला। स्त्री विषय में पाश्चात्यों के विचारों का प्रचार गत चार सौ वर्षों से चल रहा है । अनेक देशों के निवासी और कुछ प्रमाण में भारतीय भी इस प्रचार के शिकार हैं । साम्राज्य निर्माण करने वाले प्रमुख पाश्चात्य देश थे इंग्लैंड, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन और हालैंड। ये सब देश अपने साम्राज्य बीसवीं शताब्दी में खोकर केवल अपने देशों तक सीमित हो गये हैं ।

पाश्चात्यों के विश्व विस्तार का चार सौ वर्षों का यह अनुभव है । भारतीय भी मानवों को कर्तव्य बोध कराने वाली अपनी संस्कृति का प्रचार विश्व भर में गत हजारों वर्षो से कर रहे हैं । इस प्रचार के गत कम से कम चार हजार वर्षो के ठोस आधार आज उपलब्ध हैं । पृथ्वी के पांचों खंडो में वे पहुँचे थे । जहाँ-जहाँ वे पहुँचे वहाँ के स्थानीय लोग भारतीयों के संस्कृति-प्रचार तथा तदनुरूप व्यवहार से इतने दीर्घ काल तक संतुष्ट रहे । उन्होने स्वयं वह व्यवहार अपनाया और समाजिक जीवन में सुख-शांति का अनुभव किया । उनके मन में भारतीयों के विषय में सर्वदा आदर रहा है ।

विश्वभर में भारतीय संस्कृति के इतने दीर्घकालीन आकर्षण का कारण है प्राचीन भारतीय ऋषि मुनियों द्वारा किया हुआ संपूर्ण सृष्टि का मौलिक अध्ययन । इस अध्ययन के आधार पर प्रत्येक मानव के देने योग्य संस्कार उन्होंने निर्धारित किये और उन संस्कारों के अनुसार सभी भारतीय व्यवहार करें इसकी सफल व्यवस्था की । इस सुदीर्घ अनुभव के कारण निर्भीक दृढ़ विश्वास से ही स्वामी विवेकानन्द अमेरीका में उपर्युक्त कटुसत्य का विश्लेषण कर सके ।

ऋषियों के सृष्टि संबंधी मौलिक अध्ययन के असंख्य विषयों में से एक विषय इस लेख में लिया गया है । स्त्री और पुरुष में केवल स्त्री को ही गर्भ धारणा का कार्य सृष्टि निर्माता ने दिया है । सृष्टिकर्ता ने, स्त्री की शरीर रचना गर्भ धारण के लिए अत्यन्त उपयुक्त रूप से की है । यही नहीं आगे संतति के योग्य विकास के लिए आवश्यक मानसिक और बौद्धिक गुण भी उसी को दिये हैं । यही है मातृशक्ति, सृष्टि निर्माता का सृजन सामर्थ्य । विधाता निर्मित इस मातृशक्ति का सृष्टि रहस्य हमारे ऋषियों ने गहराई से समझा था । यह ज्ञान केवल सन्तान को जन्म देने वाली स्त्री ही नहीं अपितु सभी भारतीय स्त्री पुरुष भलीभांति समझें तथा तदनुरूप व्यवहार करें, सृष्टि के विधान में सहायक हो इसकी चिरकाल टिकने वाली व्यवस्था भी उन्होंने इस सुदूर भूतकाल में निर्मित की जो आज तक सालों से चली आ रही है ।

मातृशक्ति के इस मौलिक अध्ययन से विश्व-सृजन का एक चिरंतन सत्य स्पष्ट हुआ है । विश्व की किसी भी प्रकार की परिस्थिति में वह सत्य शाश्वत है, सनातन है । इस सत्य को ठीक प्रकार समझने वालों द्वारा, भोगवादी तथा व्यक्तिनिष्ठ पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित विश्वभर के मानव भी योग्य मार्ग पर आ सकेंगे । तभी हम अपने मानव जन्म को सफल कर सकेंगे ।

राष्ट्रनाश के कारण

विजय हनवते
वरिष्ठ पुनरुत्पादक, द.मु.व.

धर्म रहित राज्य, ब्राह्मण रहित धर्म विधान, क्षत्रिय रहित शासन, वैश्य रहित व्यापार, शुद्धि रहित सेवा, अन्त्यज रहित स्वच्छता-सफाई, वृक्ष रहित उद्यान, फल रहित वृक्ष, सुगन्ध रहित पुष्प, गोरस-घृतदि रहित मिष्ठान-भोजन, घृत रहित हवन, अनुभव और आचरण रहित उपदेश, त्याग रहित प्रेम, गुण और धर्म रहित शिक्षा, आदर रहित आतिथ्य, श्रद्धा रहित साधन, योग्यता रहित अधिकार, भजन रहित जीवन, कर्तव्य रहित क्रिया, अश्व-गज रहित सवारी, ईश्व रहित जन-समुदाय, न्याय रहित निर्णय, स्त्री रहित गृहस्थी, पुरुष रहित सेना, साहस रहित उद्योग, समत्व रहित ज्ञान, अनुराग रहित भक्ति, कुशलता रहित कर्म, पूर्ण निर्भरता रहित शरणागति, पूर्ण समर्पण रहित आत्मनिवेदन, गुरुओं पर शिष्यों का शासन, माता-पिता पर पुत्र का शासन, धर्मियों पर अधर्मिकों का शासन, न्यायशील राजा पर प्रजा का शासन, और पुरूषों पर स्त्रियों का शासन आदि ऐसी चीजें हैं कि जिनसे समाज और राष्ट्र का सर्वनाश हो जाता है ।

आरोग्य और आनंद के लिए मंत्र

डी. शारदा
कार्यालय अधीक्षक, द.मु.व.

1. ॐ भूतादये नमः (मित्रों से स्नेहभाव बढाने के लिए) (28 बार)
2. ॐ धात्रे नमः (संतान प्राप्ति के लिए) (28 बार)
3. ॐ नमो नरसिंहाय वज्रदंष्ट्राय वज्रिणे । (28 बार)
   वज्रदेहाय वज्राय नमो वज्र नश्वायच ।।
   (दृढ़ शरीर के लिए)
4. ॐ स्थविष्ठाय नमः (दुष्ट शक्ति से रक्षा के लिए) (108 बार)
5. ॐ पुष्कराक्षाय नमः (कष्टों से मुक्ति के लिए) (108 बार)
6. ॐ नरसिंह वपुषे नमः (विपत्ति काल में पड़ने के लिए) (108 बार)
7. ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः (घर या स्थल खरीदने के लिए) (108 बार)
8. ॐ ज्योतिषांपतये नमः (अच्छी दृष्टि के लिए) (108 बार)
9. ॐ वषट्काराय नमः (इन्टरव्यू में विजय प्राप्ति के लिए) (28 बार)
10. ॐ अक्षराय नमः (विद्या और ऐश्वर्य की वृद्धि के लिए) (28 बार)
11. ॐ भूतभावनाय नमः (अच्छे स्वास्थ्य के लिए) (28 बार)
12. कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहु सहस्त्रवान् । (28 बार)
    तस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते ।।
    (खो गयी वस्तुओं को पाने के लिए)
13. ॐ ऋषिकेशाय नमः (बुरी आदतों से बचने के लिए) (28 बार)
14. ॐ परमात्मने नमः (28 बार)
    (प्रमोशन और क्रीडाओं में विजय प्राप्ति के लिए)

स्वार्थ रहित किसान

एस.वी. सूर्यकुमारी
रिटचर (ग्रेड-II), द.मु.व.

किसी राजा को अपने राज्य के लिए योग्य मंत्री नियुक्त करना था । वह चाहता था ईमानदार और कर्मठ व्यक्ति को मंत्री पद दे । चयन कठिन था, क्योंकि राज दरबार से जुड़ा हर व्यक्ति पद हथियाना चाहता था और इसके लिए प्रायः प्रतिदिन राजा के पास सिफारिशें आ रही थीं । बहुत सोच-विचार के बाद राजा ने मन ही मन एक बात तय की, उसने राजमार्ग पर एक विशाल पत्थर रखवा दिया । फिर वह सामान्य वेषभूषा धारण कर वहीं पास में बैठ गया । वह देखना चाहता था कि कोई उस पत्थर को हटाता है या नहीं । चूंकि राजमार्ग था, इसलिए आने-जाने वाले भी बहुत थे । राज दरवार के प्रमुख अधिकारी, नगर सेठ, राजपुरोहित, सेनापति, संपन्न व्यापारी और दरबारी वहाँ से निकले, किंतु पत्थर किसी ने नहीं हटाया । सभी को पत्थर के कारण निकलने में असुविधा हुई । सभी ने राजा को जमकर कोसा कि उसका प्रशासन सुस्त है । राजमार्ग पर इतना बड़ा पत्थर पड़ा है पर उसे पता ही नहीं । तभी एक किसान अपने सिर पर सब्जी लादे वहाँ आया । उसके पास कोई वाहन नहीं था । वह चाहता तो पत्थर से बचकर आराम से निकल जाता, किंतु उसने ऐसा नहीं किया । सब्जी का टोकरा एक तरफ रख उसने पत्थर को हटाने का पुरजोर प्रयास किया और काफी देर कोशिश करने के बाद वह पत्थर को हटाने में सफल हो गया । जैसे ही पत्थर हटा, वहाँ स्वर्ण मुद्राओं से भरी एक थैली और एक पत्र उसे मिला । पत्र राजा की ओर से था, जिसमें पत्थर हटाने वाले को मंत्री पद देने का प्रस्ताव था । इस प्रकार किसान को निष्काम कर्म का अच्छा फल मिला । निःस्वार्थ कर्म सदैव शुभ फल देता है। वस्तुतः यही मन की शांति व आनंद का मूल स्रोत है और उसे पाने वाला कभी दुःखी नहीं रह सकता ।

काला बाजारी

एम.जी.बदकी
तकनीकी श्रमिक, द.मु.व.

परेशान है यारों जनता सारी,
खेल रही है काला बाजारी ।
सस्ती चीज महंगे दामो में,
बेच रहे हैं ये व्यापारी ।

इनसे मिले हैं कुछ अधिकारी,
रिश्वत लेना जिनकी बीमारी ।
मिर्ची, तेल, दूध, घी में मिलावट,
खतरे में है तन्दुरूस्ती हमारी ।

खामोशी ना बन जाये आदत,
बंदकरो यह कालाबाजारी ।

सुख दुःख

सुख की नदियाँ होती छोटी ।
दुःख के पहाड़ बड़े बड़े ।।
जो दुःख को पार कर चुके ।
वही आगे सफल हुए ।। ।।१।।

जो कष्टों से घबराता है ।
वह कायर कहलाता है ।।
अति बलशाली होकर भी ।
शक्ति हीन बन जाता है । ।।२।।

दुःख से डरकर नहीं भागना ।
बात सदा यह रखना याद ।।
एक सुनहरी सुबह आती ।
हर अंधेरी रात के बाद ।। ।।३।।

जब जीवन में कष्ट न होगा ।
जब खुशियों का आदर न होगा ।।
खुशी क्या चीज है आखिर ।
उसका ज्ञान न होगा ।। ।।४।।

कष्ट से कभी न डरना ।
साहस के साथ आगे बढना ।।
सुख की नदियाँ होती छोटी ।
दुःख के पहाड़ बड़े बड़े ।। ।।५।।

वैराग्य

विजय हनवते
वरिष्ठ पुनरुत्पादक, द.मु.व.

हमें सबसे पहले वैराग्य के बारे में जान लेना चाहिए, वैराग्य कैसा होता हैं । वैराग्य आने के क्या कारण है, इन सब का विस्तृत वर्णन देने की चेष्ठा करता हूँ । यह हमारे सुखमय जीवन के लिए लाभदायक है । देखिए नीचे दिये हुअे वैराग्य के कारण ।

1) दुःख से होने वाला वैराग्य
2) भय से होने वाला वैराग्य
3) विचार से होने वाला वैराग्य

1) <u>दुःख से होने वाला वैराग्य</u> : घर, धन, स्त्री, पुत्र, परिवार आदि के अनुकूल न होने पर तथा परिस्थिति के प्रतिकूल होने पर मन में संसार के त्याग की उकसाहट से भरी भावना, उसे दुःख से होने वाला वैराग्य कहते हैं । यह दुःख से होनेवाला वैराग्य असली नहीं; क्योंकि हमें आराम नहीं मिला, दुत्कार मिली, तिरस्कार मिला या मनमानी चीज नहीं मिली तो मन में भाव आया कि छोड़ो संसार को, इसमें क्या पड़ा है । संसार में तो केवल दुःख ही दुःख भरा है । इस प्रकार का वैराग्य तो सभी को हो सकता है । कुत्ता भी तनी हुई लाठी देखकर भागता है, अपनी जान बचाता है । अतः वह यथार्थ वैराग्य नहीं । इसमें जो उकसाहट है और अनुकूलता का अनुसंधान है वह वैराग्य नहीं । इसमें तो राग ही कारण है, क्योंकि दुःख के कारण हटने पर अर्थात अनुकूलता प्राप्त हो जाने पर वह त्याग का भाव रहना कठिन है यदि परिस्थिति प्रतिकूल न हो, सब कुटुम्बजन मन अनुकूल सेवा करने लगें तो फिर मनुष्य वैराग्य भूल जाता है । इस वैराग्य में वे तत्त्व जो दुःख का कारण हैं केवल वे ही वैराग्य के अंश हैं । इस प्रकार दुःखके कारण होनेवाला वैराग्य यथार्थ वैराग्य नहीं है, किंतु उस समय यदि अच्छी संगत मिल जाय तो वही वैराग्य अधिक बढ़कर आत्मोद्धार का कारण बन सकता है । इसलिए उसे भी वैराग्य कह सकते हैं ।

2) <u>भय से होने वाला वैराग्य</u> : दुःख से होने वाले वैराग्य की अपेक्षा भय से होने वाला वैराग्य श्रेष्ठ है । स्वास्थ्य का भय, राज्य का भय, समाज का भय मान प्रतिष्ठाका भय, जन्म-मरण का और नरकों का भय - इन अनेक प्रकार के भय से होने वाले राग के अभाव को 'भय से होने वाला वैराग्य' कहते हैं ।

भोगों के भोगने से शरीर शिथिल होता है, रोग बढ़ते हैं शाक्ति की कमी महसूस होती है, कार्य करने का साहस नहीं होता । यह वैराग्य क्लेशों के भय से खाने-पीने की वस्तु और स्त्री के साहचर्य से दूर हटना है; एवं इसी प्रकार रोगादि के हो जाने पर उसकी वृद्धि न हो जाय; इस भय से कुपथ्यरूप भोगों से हटना है, यह स्वास्थ्यनाश के भय के कारण होने वाला वैराग्य है ।

जुर्माना, कारागार, फाँसी आदिके भय से चोरी, व्यभीचार, डकैती, हिंसा आदि अत्याचार-अनाचारसे प्राप्त होनेवाले मोगोंसे जो मनका हट जाना है, यह राज्य भय से होने वाला वैराग्य है ।

जाति बहिष्कार, आर्थिक व्यय लड़के लड़कियों के विवाह में होने वाली कठिनाई, समाज में बदनामी आदि के भय से जो सामाजिक नियमों को भंग करके भोगों को भोगने की इच्छा का त्याग करना 'समाज-भय से होने वाला वैराग्य' है ।

वैश्यागमन, मदिरापान हिंसा आदि से कुल-परम्परागत मान का नाश होगा तथा लोग हमें नीची दृष्टि से देखेंगे-ऐसे विचारों से लौकिक मर्यादा में रहकर भोगों के त्याग का जो भाव है, वह 'मान प्रतिष्ठा के भय से होने वाला वैराग्य' है ।

इस प्रकार भयसे होनेवाले वैराग्य के कई रूप हैं । इनमें नरक के भय से होने वाला वैराग्य अन्य भयों से होने वाले वैराग्य की अपेक्षा स्थायी और श्रेष्ठ है, पर यह भी असली वैराग्य नहीं है । इनमें भी पदार्थों से सूक्ष्म राग नहीं छूटा है । केवल भय के कारण पदार्थों से मन हटा है । यह भय से होनेवाला वैराग्य है । भय न रहे तो इस वैराग्य का रहना भी कठिन है ।

3) <u>विचार से होने वाला वैराग्य</u> : भय से होने वाले वैराग्य की अपेक्षा विचार-विवेक से होने वाला वैराग्य ऊँचा है । विचार का अर्थ है सत्-असत्, सार-असार, हेय-उपादेय और कर्तव्य अकर्तव्य का आदि का विवेक जो असत्, असर, हेय और अकर्तव्य का मनसे परित्याग है अर्थात् इनके प्रति मन के राग का जो अभाव है, उसको विचार से होने वाला वैराग्य कहते हैं । विषय-सेवन करने के फल स्वरूप विषयों में राग-आसक्ति बढ़ती है, जो कि संम्पूर्ण दुःखोंका कारण है और विषयों में वस्तुतः सुख है भी नही, केवल आरम्भ में सुख प्रतीत होता है ।

विषयों में सुख होता तो बड़े-बड़े धनी, भोगी और पदाधिकारी भी सुखी होते । पर विचार पूर्वक देखने पर पता चलता है कि वे भी दुःखी हैं । पदार्थों में शान्ति न थी, न है

और न हो सकती है । विचारशील व्यक्ति को तो पग-पग पर अनुभव भी होता है कि इनमें सुख नहीं है ।

जो-जो भोग सुख-बुद्धि से भोगे गये, उन-उन भोगों से धीरज नष्ट हुआ, ध्यान नष्ट हुआ, रोग उत्पन्न हुए, चिन्ता हुई, व्यग्रता हुई, पश्चाताप हुआ, बेइज्जती हुई, बल गया, शान्ति गयी एवं दुःख-शोक-उद्वेग आये-ऐसा परिणाम देखने में आता है । इससे मालूम होता है कि विषयों में सुख नहीं ।

यच्च कामसुखं लोके, यच्च दिव्य महत् सुखम ।
तृष्णा क्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशीं कलाम ।।

'जो भी संसार में इष्ठ पदार्थों के मिलने से सुख होता है तथा जो स्वर्गीय महान् सुख है, वे सब सुख मिलकर भी तृष्ठाा नाश के सुख के सोलहवे हिस्से के बराबर भी नहीं हो सकते।'

न सुखं देवराजस्य न सुखं चक्रवर्तिनः ।
यत् सुखं वीतरागस्य मुनेरेकान्तशीलिनः ।।

'एकान्तशील वीतराग मुनि को जो सुख है, वह सुख न तो इन्द्र को है न चक्रवर्ती सम्राट को ही ।'

ना सुख काजी पंडिता ना सुख भूप भयाँ ।
सुख सहजाँ ही आवसी तृष्णा रोग गयाँ ।।

'तृष्णारूपी रोग चले जाने से सुख सहज ही आ जायेगा' । जब तक पदार्थों की लोलुपता है, दासता है, तब तक सुख कहाँ ? दासता, लोलुपता, दीनता मिटने पर ही सुख होगा और यह मिटेगी चाह के न रहने पर ।

चाह गयी चिंता मिटी मनुवा बेपरवाह ।
जिनको कछु न चाहिये सो जग शहंशाह ।।

जब तक चाह है, तब तक चिन्ता नहीं मिटती और जब तक चिन्ता नहीं मिटती, तब तक सुखी नहीं हो सकता । इसी सार में मैने सभी पाठकों को, सुखः दुःख, मोह-माया, के जाल में फंसकर न रहते हुए, आकाश में उड़ने वाले पक्षी की तरह जीवन-यापन करने से अपने मन में जो वैराग्य का भाव आया है उससे दूर-दूर तक उड़ते हुए जीवन का आनन्द लेना चाहिए ।

समय की माप

एम. रामकृष्णा
आर्टीफिसर, द.मु.व.

एक सुई की नोंक को दो जुड हुए पत्तो को पार कर जाने में जितना समय लगता है उसे अल्पकल्प कहते हैं ।

30 अल्पकल्पा	1 तृटि
30 तृटि	1 कला
30 कला	1 काक्षता
30 काक्षता	1 निमिष (मात्र)
4 निमिषा	1 गणिता
10 गणिता	1 नेत्राविरपु (दीर्घ श्वास)
6 नेत्रविरपु	1 विनालिका
6 विनालिका	1 घटिका
60 घटिका	1 दिन और रात
15 दिन और रात	1 पक्ष (अर्ध मासिक)
2 पक्ष (अर्ध मासिक) कृष्ण, शुक्ला	चन्द्र का माह (पितर का दिन)
2 माह	1 ऋतु (मौसम)
3 ऋतु (मौसम)	1 आयन
2 आयन (उत्तरायना, दक्षिणायना)	1 संवत्सर/वर्ष (ईश्वर का 1 दिन)
360 वर्ष	1 दिव्य वर्ष (ईश्वर का 1 वर्ष)
4,32,000 वर्ष	1 कलियुगा
8,64,000 वर्ष	1 द्वापर युगा
12,96,000 वर्ष	1 त्रेतायुगा
17,28,000 वर्ष	1 कृवायुगा (1 चतुरयुगा = 43,20,000 वर्ष = 1 कृवायुगा + 1 त्रेतायुगा + 1 द्वापरयुगा + 1 कलियुगा)
71 चतुर युगा	1 मन्वंतरा
14 मन्वंतरा	ब्रह्मा का 1 दिन
लगभग मनुष्य की आयु 70 वर्ष	25,550 दिन (6,13,200 घंटे)

के.बी.ए. मशीन

पी. कुमार
सहायक प्रबंधक, द.मु.व.

तकनीकी विशेषताएं -

1.	पेपर साइज (अधिकतम)			
	- सामान्य डिजाइन	-	720 x 1050 मि.मी.	
	- विशिष्ट डिजाइन	-	740 x 1050 मि.मी.	
	पेपर साइज (कम से कम)			
	- सामान्य डिजाइन	-	360 x 520 मि.मी.	
	- विशिष्ट डिजाइन	-	350 x 500 मि.मी.	
2.	मुद्रण क्षेत्रफल (अधिकतम)			
	- सामान्य डिजाइन	-	710 x 1030 मि.मी.	
	- विशिष्ट डिजाइन	-	730 x 1030 मि.मी.	
3.	अधिकतम मुद्रण चाल	-	15000 पेपर प्रति घंटा	
4.	पाइल ऊँचाई		**फीडर**	**डेलिवरी**
	- मुख्य पाइल (फलोर के ऊपर)	-	1300 मि.मी.	1200 मि.मी.
	- नॉन स्टॉप पाइल (फलोर के ऊपर)	-	1000 मि.मी.	1100 मि.मी.
5.	मुद्रण करने योग्य वस्तु			
	- कागज	-	40-200 ग्राम/वर्ग मी.	
	- बोर्ड कागज	-	अधि. 800 ग्राम/वर्ग मी.	
6.	इम्प्रेशन फ्री ऐज	-	10 ± 1 मि.मी	
7.	कापी लाइन प्रेशर प्लेट			
	- सामान्य डिजाइन	-	50 मि.मी	
	- विशिष्ट डिजाइन	-	36-50 मि.मी	

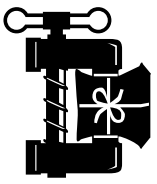

चुटकुले

महेश्वर साहू
मुख्य मानचित्रकार, द.मु.व.

1. राम बाबू ने एक महिला को अपने पति को झाड़ू से पीटते हुए देखा और उसका कारण पूछा । महिला बोली कि मेरे पति बाहर गये थे । मैंने उनके साथ मोबाईल से बात करनी चाही तो उनके मोबाईल से एक महिला बोली कि आप जिससे सम्पर्क करना चाहते हैं वह अभी व्यस्त हैं । तो आप बोलिए कि इनको पीटूंगी नहीं तो क्या पूजा करूँगी?

2. एक जज साहब ने एक फाँसी पाने वाले अपराधी को फाँसी के पहले पूछा कि उसकी आखरी ख्वाईश क्या है । तो अपराधी बोला वह पत्नी से एक बार मिलना चाहता है । तो जज साहेब ने अपराधी से पूछा वह आखिर अपने पिता माता से न मिलके अपनी पत्नी से क्यों मिलना चाहता है ? तो अपराधी बोला कि अगले जन्म में माता पिता तो वह पैदा होते ही देखेगा, मगर पत्नी से मिलने के लिए उसे 21 साल तक इंतजार करना पड़ेगा ।

3. एक मास्टरजी ने एक छात्र के घर जाकर उनके पिता से शिकायत की कि उनका बेटा विद्यालय में दूसरे छात्रों के कलम, पेन्सिल, कापी और रबर आदि चुराता है । तो पिता ने बेटे को मास्टर जी के सामने बुलाकर बोला कि वह खुद अपने दफ्तर से बहुत कलम, पेन्सिल, कागज और रबर छिपा के घर लाता है और उसको देता है फिर भी वह साथियों से ये चीजें क्यो चोरी करता है ?

शास्त्रों की प्रामाणिकता

ए. साईबाबा
वरिष्ठ पुनरूत्पादक, द.मु.व.

प्रश्न : हिन्दू धर्म को सनातन धर्म क्यो कहते हैं तथा वेदों को अपौरुषेय क्यों कहा गया है? सनातन धर्म का हिन्दू धर्म नाम कैसे पड़ा ?

उत्तर : हिन्दू धर्म को सनातन कहने का तात्पर्य यह है कि वह अति प्राचीन काल से चला आ रहा है । इतिहास की पहुँच हिन्दू धर्म के मूल उद्गम तक नहीं जाती । जैसे अन्य धर्मो के प्रवर्तक और संस्थापक होते हैं, वैसे हिन्दू धर्म के नहीं है । उदाहरणार्थ, ईसाई धर्म ईसा पर, इस्लाम धर्म मुहम्मद पर, पारसी धर्म जरथुस्त्र पर, बौद्ध धर्म बुद्ध पर तथा इसी प्रकार अनेक धर्म अपने-अपने प्रवर्तकों की नींव पर खड़े है । पर हिन्दू धर्म की बात निराली है । इसका कोई प्रवर्तक नहीं - यह मानव हृदय में आत्मा की अनुभूति से उपजा है । इसी कारण इसे सनातन कहते हैं और इसीलिए यह अपौरूषेय भी कहलाता है । अपौरूषेय का तात्पर्य है कि इसे किसी पुरुष ने नहीं बनाया । किसी व्यक्ति ने वेदों को नहीं लिखा । मानव-हृदय में जिज्ञासु ऋषि-हृदय में आत्मा परमात्मा सम्बन्धी सत्यों की जो अनुभूतियाँ उतरीं, उन्हीं अनुभूतियों का शब्दबद्ध रूप ये वेद हैं ।

'हिन्दू' शब्द मूलतः भारतीय नहीं है । यह फारसी मुख से निकला हुआ शब्द है । उस समय सिन्धु नदी के इस पार बसनेवाले भारतवासीयों को सम्बोधित करने के लिए फारसीयों द्वारा हिन्दू शब्द का प्रयोग किया जाता था । फारसी में 'स' का उच्चारण 'ह' होता है अतः 'सिन्धु' उनके लिए 'हिन्दू' हो गया । तभी से हमने भी अपने लिए हिन्दू शब्द को स्वीकार कर लिया । अतः हम देखते हैं कि हिन्दू शब्द एक भौगोलिक सीमा का द्योतक है और उसके अनुसार सिन्धु नदी के इसपार बसनेवाले समूचे भारतवासी भी हिन्दू हैं ।

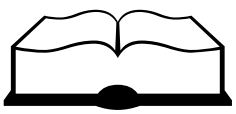

महाभारत की सेना

एन. बहादुर
अवर श्रेणी लिपिक, द.मु.व.

अक्षहोणि की गणना :-

1 चतुरंग	1 रथ + 3 हाथी + 3 घोड़े + 5 सैनिक	= पत्ति
1 पत्ति	X 3	= 1 सेनामुखा
1 सेनामुखा	X 3	= 1 गुल्मा
1 गुल्मा	X 3	= 1 गणा
1 गणा	X 3	= 1 वाहिनी
1 वाहिनी	X 3	= 1 प्रिऊतना
1 प्रिऊतना	X 3	= 1 चमु
1 चमु	X 3	= 1 अनिकिनी
1 अनिकिनी	X 10	= 1 अक्षहोनि
1 अक्षहोनि	21870	रथ +
	21870	हॉथी +
	65160	घोड़े +
	109350	सैनिक +
		कुल सेना ने महाभारत युद्ध में भाग लिया - 18 अक्षहोनि
18 अक्षहोनि	393660	रथ +
	393660	हॉथी +
	1172880	घोड़े +
	1968300	सैनिक +
		शस्त्र एवं अस्त्र को पहुँचाने वाले +
		भोजन बनानेवाले +
		नौकर +
		वैद्य +
		उनके सहायक + वगैरह.....

पृथ्वी का आयुष्य

वी.एस.वी.एस. उमामहेश्वर राव
सहायक, द.मु.व.

	काल-रेखा		मानव वर्ष
कलियुगा	1200	पावन वर्ष	432000 वर्ष
द्वापरयुगा	2400	पावन वर्ष	864000 वर्ष
त्रेतायुगा	3600	पावन वर्ष	1296000 वर्ष
सत्ययुगा	4800	पावन वर्ष	1728000 वर्ष
चतुरयुगा	12000	पावन वर्ष	4320000 वर्ष
1 मन्वंतरा	चतुरयुगा		
14 मन्वंतरा	306720000 X 14 = 4294080000 वर्ष		
संधीकाल	1728000 X 14 = 24192000 वर्ष		

(प्रति मन्वंतर के पश्चात)

संधी काल 1728000 X 1 = 1728000 वर्ष

(प्रति ब्रह्म दिवस के पश्चात)

ब्रह्म का 1 दिन = ब्रह्मा की 1 रात = एक का जीवन = 4320000000 वर्ष

1 दिन + 1 रात ब्रह्मा का = 8640000000 वर्ष

ब्रह्मा का 1 वर्ष = कल्प 259200000000 X 12 = 3110400000000 वर्ष

वर्तमान ब्रह्मा ने अपने आयु के 50 वर्ष पूर्ण कर अपने 51 वर्ष के पहले श्वेतवरस कल्प में प्रवेश किया है ।

ब्रह्मा के 51 वे वर्ष के वैवस्वता म्वंतर के खेतवरहा कला का कलियुग का 5108 वा अभी चल रहा है । (2007 CE)

वर्तनाम कल्प के 197,29,49,108 वर्ष के प्रथम दिन तक व्यतीत हो चुके है ।

पृथ्वी की आयु 1972 बिलीयन्स वर्ष (1972 मीलियन्स) में 2.347 बिलीयन्स वर्ष प्रलय के लिए शेष हैं ।

वर्तमान ब्रह्मा 100 वर्ष पश्चात महाप्रलय का आरंभ होगा ।

14 मन्वंतरे

(1) स्वयभूवा (2) सरोचिषा (3) औत्तमा (4) तमसा (5) रैवता (6) चकशसा (7) वैवस्वता (वर्तमान) (8) सवर्णिम (9) दक्ष सवर्णि (10) ब्रह्म सवर्णि (11) धर्म सवर्णि (12) रूद्र सवर्णि (13) रच्यदेवा (14) सवर्णि (15) इन्द्र सवर्णि ।

देखो आयी होली रे

बी.के. धवने
तकनीकी श्रमिक, द.मु.व.

द्वेष क्लेश भय सब मिटाने, देखो आयी होली रे,
आयी सबको गले लगाने, रंगो की ये डोली रे ।
रंगे हुए हैं सबके चेहरे, हर दिल में हरियाली है,
संग श्याम के आज झूमती, हर राधा मतवाली है ।
माथे पर गुलाल रच आयी, मस्तानों की टोली रे,
आयी सबको गले लगाने, रंगो की ये डोली रे । ।।१।।

आज नहीं दुश्मन है कोई, खरा न कोई खोटा है,
आज नहीं दीवार है कोई, और न कोई छोटा है ।
हर घर में यूँ गूँज रही है, एक प्रेम की बोली रे,
आयी सबको गले लगाने रंगो की यह डोली रे । ।।२।।

इसी भांति प्रेम का दीपक सबके दिल में जला रहे,
इसी भांति देश में अपने, हर दिन होली जवाँ रहे ।
देखो कहीं न छूटे हमसे, यह मधुरिम रंगोली रे,
आयी सबको गले लगाने, रंगो की ये डोली रे । ।।३।।

समानार्थी शब्दावली

एम.जी.बदकी
तकनीकी श्रमिक, द.मु.व.

विभूती = महापुरूष, सदृश = जैसा, सपूत = अच्छी संतान, अड़चन = बाधा, ख्याति = कीर्ति, गतिविधि = कार्यकलाप, अधिवेशन = महासम्मेलन, भीषण = भयंकर, कारावास = बंदीगृह, कारागार, दैदीप्यमान = अत्यंत उज्वल, भुखमरी = भूख के कारण मौत, दिशा-दर्शन = मार्ग दर्शन, निस्वार्थ = स्वार्थ रहित, माधुर्य = मिठास, चिंता रहित = बेफिक्र, निर्भय = भय रहित, स्वच्छंद = उन्मुक्त, अतुलित = अनुपम, झोपड़ी = कुटिया, चिथड़ा = फटे हुए कपड़े, किल्लो = किलकारी, मचल जाना = जिद करना, गाल = कपोल, उत्थान = विकास, महाशैल = महाकाय पर्वत (पहाड़), प्रबल = शक्तिशाली, उच्च कोटि = ऊँचे स्तर का, बुनियादी = मौलिक, अल्पज्ञ = कम जानने वाला, जूझना = संघर्ष करना, निर्लज्ज = बेहया, बर्बरता = हैवानियत, हितकर = लाभकारी, मौलिक = मूलभूत, सुरबाला = अप्सरा, गूँथना = पिरोना, प्रतिभाशाली = होनहार, खड्डा = गड्ढा, पेशगी = अग्रिम, करार-समझौता, पदच्युत = बरखास्त करना, गृहनगर = स्थायी निवास, छात्रवृत्ति = वजीफा, कक्ष = प्रकोष्ट, कार्यान्वयन = क्रियान्वयन, पहल = पक्ष, छाप = मुहर, सामंजस्य = समरसता, बढ़ाव = प्रोत्साहन, सकीर्ण = संकुचित, प्रभाग = मंडल, दस्तावेज = प्रलेख, लागू = प्रभावी, दर्ज = प्रविष्ट, गवाही = प्रमाण (साक्ष्य), अनुमान = प्राक्कलन, विमुक्त करना = छूट देना, अनुमोदन = मंजूरी, विदेशी = वाह्य, शुल्क = फीस, निःशुल्क = मुफ्त, संदर्शन = मार्गदर्शन, अर्धवार्षिक = छमाही, अपात्र = अयोग्य, अक्षम = अयोग्य, चिकित्सा = उपचार, वैकल्पिक = ऐच्छिक, संदर्भ = हवाला, सहमति = सम्मति, पावती = रसीद, लेखा = खाता, प्रबंध = व्यवस्था, कोषाधिकारी = खजांची, अभियंता = इजीनियर, संगणक = कम्प्यूटर, प्रवर = वरिष्ठ, सक्षम = योग्य (लायक)

परिवेश सुरक्षा

महेश्वर साहू
मुख्य मानचित्रकार, द.मु.व.

हमारी धरती बड़ी सुन्दर,
जल स्थल वन इसके आधार ।
जल स्थल वन प्राणी आकाश,
ये हैं हमारे परिवेश के अंश ।
मानव परिवेश के अंश हैं,
इसमें जीते इसमें मरते हैं ।
स्वस्थ परिवेश जीवन हमारा,
ऐसा जीवन हो सबको प्यारा ।
मगर सागर जैसी आबादी बढ़ी,
परिवेश पर कुल्हाड़ी पड़ी ।
रोटी कपड़ा और घर के लिये,
दिन रात मानव ने एक किये ।
फिर भी अपना पेट न भरा,
जीने के लिये परिवेश बिगाड़ा ।
अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये,
देश देश युद्ध करते रहे ।
सुन्दर धरती उजड़ गयी,
रोग-दुःख, शीक-व्याधि लायी ।
अव हमारी भलाई हमें सोचना,
पर्यावरण संतुलित रखना ।
पेड़ पौधे वन नहीं काटेंगे,
जल-थल वायू स्वच्छ रखेंगे ।
जन्म नियोजन अपनायेंगे,
आबादी को नियंत्रण करेंगे ।
छोटा परिवार सुख लाएगा,
मानव जाति का कल्याण होगा ।
सब मानव जाति एक होंगे,
सबकी भलाई सब सोचेंगे ।
सब परिवेश की करेंगे रक्षा,
परिवेश देंगे हमें सुरक्षा ।

सफलता - सूत्र

एम. रामकृष्णा
आर्टीफिसर, द.मु.व.

1. मैं और मेरा संपूर्ण अस्तित्व ब्रह्म एवं ब्रह्मांड से है व इसी के लिए है । भागवत सत्ता व संपूर्ण अस्तित्व के प्रति मैं सदा कृतज्ञता का भाव रखूंगा । मेरी आत्मा में परमात्मा प्रतिपल जो भी प्रेरणा, संदेश, निर्देश व आज्ञा दे रहा है, उसे ईश्वर का आदेश मानकर ईश्वरीय योजना के तहत भागवत कर्म करना, यही मेरा धर्म व जीवन का ध्येय है । मै और मेरा संपूर्ण अस्तित्व समाज, राष्ट्र, लोक कल्याण व भगवान के लिए है ।

2. मैं एक व्याक्ति नही, मैं संपूर्ण राष्ट्र की अभिव्यक्ति हूँ । मैं संकीर्ण नहीं, विराट हूँ। मैं परमात्मा का प्रतिरूप हूँ । मैं सत्य, अहिंसा व सदाचार का प्रतिनिधि हूँ । मेरे तन में, मेरा वतन बसता है । मै भारत की तकदीर व तस्वीर हूँ । मै अपना व अपने वतन का भाग्य विधाता हूँ ।

3. कर्म ही मेरा धर्म है । कर्म ही मेरी पूजा है । कर्म ही जीवन व जगत का सत्य है । निष्काम कर्म, कर्म का अभाव नहीं, कर्तव्य के अहंकार का अभाव होता है ।

4. राष्ट्र-धर्म सबसे बडा धर्म है । राष्ट्र देव सबसे बड़े देवता है व राष्ट्र प्रेम सबसे उत्कृष्ट कोटि का प्रेम है । राष्ट्रहित सर्वोपरि है । राष्ट्र मेरा सर्वस्व है । इदं राष्ट्रस्य इदन्न मम। मेरा तन-मन-धन व जीवन राष्ट्रहित में समर्पित रहेगा ।

5. मेरा एक दिन एक जिंदगी के बराबर है तथा एक क्षण दिन के बराबर है । अतः एक-एक दिन को मै एक जिन्दगी की तरह पूरे उत्साह से जीऊंगा, एक क्षण के लिए भी निराश नही होऊंगा । ये दिन ही जिन्दगी का आखिरी दिन है ऐसे एक-एक दिन को जीऊंगा ।

6. सब मनुष्यों को भगवान ने प्रथम होने की शक्ति व सामर्थ्य दिया है । मै अपने जीवन में अपने क्षेत्र में विश्व का प्रथम व्यक्ति-एक आदर्श (आइकॉन) बनने हेतु प्रतिपल संघर्ष करूंगा । बडी सोच, कड़ी मेहनत व पक्के इरादों के साथ ''चरैवेति चरैवेति'' के सिंद्धांत पर चलकर भगवान के अनुग्रह, माता-पिता व गुरू के आशीष, ईमानदारी से कठोर मेहनत करते हुए सही निर्णय व सबको श्रेय व सम्मान देते हुए मैं एक दिन सफलता के शिखर पर अवश्य पहुँचूँगा ।

7. मै 24 घंटे अपने ध्येय लक्ष्य (अल्टीमेट-गोल-टार्गेट) को अपने सामने रखकर जीऊंगा, एक क्षण के लिए भी स्वयं को निम्न चेतना में नही जाने दूंगा, सदा उच्च चेतना, दिव्य चेतना, सहज योग, सहज समाधि, जीवन मुक्ति या विदेह भाव की अवस्था में रहूँगा व प्रतिपल शिवोऽहम - शिवोऽहम का अनुभव करूंगा ।

8. मै आत्मा, परमात्मा व राष्ट्र की शक्ति को पूर्ण विवेक व प्रामाणिकता के साथ समाझकर उसका सौ प्रतिशत सही उपयोग करूंगा । सब स्वरूपों में ब्रह्म स्वरूप का दर्शन एवं सब संबंधो में ब्रह्म संबंध की अनुभूति करता हुआ, जीवन के अंतिम सत्य, शाश्वत सुख को हर पल अनुभव करता हुआ गुरू, भगवान व राष्ट्र को केन्द्र में रखकर जीऊंगा ।

9. प्रणव के जप व प्राणायाम के तप से सब जप, तप, शक्ति व सिद्धियों को प्राप्त कर शरीर, इंद्रियों एवं मन पर विजय प्राप्त कर पिंड व ब्रह्माण्ड-गत-समस्त शक्तियों के साभ तादात्मय अनुभव करूंगा ।

10. ज्ञान, कर्म व भक्ति की पराकाष्ठा में जीता हुआ, मै परा व अपरा विद्याओं को प्राप्त करूंगा तथा जीवन व जगत में भगवान का साम्राज्य स्थापित करूंगा । ''स्वकर्मणा तमभ्यचर्य सिद्धिं विन्दति मानवः'' ।

नारियों के अधिकार व कर्तव्य

ए. साईबाबा
वरिष्ठ पुनरूत्पादक, द.मु.व.

प्रश्न : भारत के धर्मग्रन्थों में नारी की इतनी निन्दा क्यों की गयी है ? क्या नारी नरक है?

उत्तर : नहीं हम ऐसे कथनों से सहमत नहीं हैं । नारी शक्ति ही जगदम्बा का स्वरूप है। इसकी प्रसन्नता व्यक्ति परिवार और समाज का निर्माण करती है । उसकी आह समाज की जड़ों को सुखा देती है । जिन धर्मग्रन्थों में नारी की निन्दा है, वे दुराग्रह से पीड़ित हैं । ऐसे ही ग्रन्थों और विचारों ने हिन्दू धर्म को खोखला बना दिया है ।

प्रश्न : आज की विषय परिस्थिति में भारतीय नारी का क्या स्वरूप और उत्तरदायित्व होना चाहिए ?

उत्तर : विश्व में सामान्य दृष्टि में जड़ और चेतन ये दो श्रेणियाँ दिखाई पड़ती हैं । जिस समय समाज के अधिकांश लोग जड़ में ही अपनी आस्था केन्द्रित कर, उसी को सर्वस्व समझने लगते हैं, तो उनके लिए शरीर पूज्यनीय हो जाता है । ऐसी अवस्था विषम परिस्थिति को जन्म देती है । आज लोग शरीर-प्रधान हो गए हैं और चेतन्य के अस्तित्व को देखते हुए भी उसे भुलाए बैठे हैं । इस कारण मनुष्य स्वार्थी तथा लोभी हो गया है और इन्द्रिय-सन्तुष्टि को ही सब कुछ समझ बैठा है ।

जैसे पुरुष आज के वातावरण का शिकार हुआ है, उसी प्रकार ही नारी भी हवा से अछूती नहीं है । बल्कि कई क्षेत्रों में तो देखने में आया है कि स्वतंत्रता तथा पुरुष से समानता के नाम पर नारी कुछ अधिक ही स्वच्छन्द हो गई है । और इसके परिणाम भी स्पष्ट हैं । अमेरिका तथा यूरोप के विभिन्न देशों में 'परिवार' नामक संस्था के टूटने का एकमात्र कारण यही है । धीर-धीरे अपने देश में भी यह दूषित हवा प्रवेश करती जा रही है । और प्रभावित परिवारों को तोड़ती जा रही है ।

भारत में नारी सदा पूज्यनीय रही है । जबकि भारतेत्तर देश उसके रमणी-रूप के उपासक रहे हैं, भारत ने उसके जननी-रूप को ही गौरव प्रदान किया है और माता को परिवार के शीर्ष स्थान पर बिठाया है । भारत की आध्यात्मिकता ही इसका कारण रही है। अन्य देशों की संस्कृति नारी को भोग्या समझती है, जबकि भारत को शिक्षा मिली है कि वह नारी के मातृत्व को सम्मानित करें । आज पश्विमी हवा के झोके में हमारे ये सनातन आदर्श उड़कर बिखरते जा रहे हैं । तथापि आज भी भारत की नारी अपने देश की सनातन संस्कृति से परिचित हो जाती है और देश को उठाने का निश्चय कर लेती है तो देश पुनः एक बार गौरव के शिखर पर पहुँच जाएगा । भारत की नारी अपने पति के लिए हाड़ा तथा सावित्री बने और अपने पुत्रों के लिए मदालसा तथा सुमित्रा बने । वह आधुनिक शिक्षा में शिक्षित तो हो, पर आधुनिक न बनकर भारत के नारी-आदर्श की जीती-जागती प्रतिमा बने। वर्तमान युग में माँ श्री शारदा और भगिनी निवेदिता - एक ऐसा युगल जीवन है जो हमारे मन में उठनेवाली शंकाओं का समाधान कर देता है । यह युगल जीवन पूर्व और पाश्चिम का मिलन है । यह मिलन भारत के कल्याण के लिए है और भारतीय नारी के समक्ष एक अपूर्व आदर्श रखता है । इस मिलन में ही भारतीय नारी का वांछित स्वरूप निहित है ।

शाकाहार ही क्यों?

बी.एस.एस.शास्त्री
वरिष्ठ पुनरुत्पादक, द.मु.व.

जैसे इस दुनिया में हमें जीने का हक है, वैसे ही सृष्टि के अन्य प्राणियों को भी निर्भय होकर यहां जीने का अधिकार है । यदि हम किसी जीव को पैदा नहीं कर सकते तो आखिर उन्हें मारने का अधिकार हमें किसने दिया है । हम किसी पशु-जीव या प्राणी को इसलिए मार देते हैं कि ये देखने में हमारे जैसे नहीं लगते । वैसे तो सब प्रणियों को दिल, दिमाग व आँखें होती हैं । इनको दुःख या गहरी पीड़ा होती है । लेकिन हम इसलिए उन्हें मार दें कि उनके पास अपनी सुरक्षा के लिए हथियार नहीं हैं या लोकतंन्त्र की नई तानाशाही के इस युग में उन्हें मतदान करने का अधिकार नहीं है । यह कहां तक तर्क संगत है । इनकी सुरक्षा की सरकारों को दरकार नहीं हैं । काश! उनको भी हमारे जैसी बोली बोलनी आती तो अपनी पीडा व दर्द से शायद वे इन्सान को अवगत करा देते, लेकिन क्या करें, बेचारे इन जीवों को इन्सानी भाषा नहीं आती और हम बेरहमी से निरपराधी, निरीह, मूक प्रणियों की हत्याएं करके खुशियां मनाते हैं और दरिंदगी के साथ कुत्तों एवं भेडियों की तरह मांस को नोच-नोचकर खाने में गौरव का अनुभव करते हैं । इससे ज्यादा घोर पाप और अपराध कुछ नहीं हो सकता । जब बिना निर्दोष प्राणियों की हत्या किए शाकाहार से तुम जीवन जी सकते हो तो क्यों प्राणियों का कत्ल कर रहे हो ? मनुष्य स्वभाव से ही शाकाहारी है। मानवीय शरीर की संरचना शाकाहारी प्राणी की है, यह वैज्ञानिक सत्य है ।

आहार

एल.वी.एस.राजू के.
वरिष्ठ पुनरुत्पादक, द.मु.व.

जैसे विषयुक्त आहार हमारे शरीर में भयंकर विकार उत्पन्न करता है वैसे ही विकार युक्त विचार भी हमारे मस्तिष्क में प्रविष्ठ होकर भयंकर तनाव, दुःख, अशान्ति व असाध्य रोग उत्पन्न करते हैं । अतः यदि आप एक ऊँचा व्यक्तित्व पाना चाहते हो तो आहार एवं विचारों के प्रति पल-पल सजग रहना । व्यक्ति अपने शरीर के प्रति जितनी बेरहमी बरतता है शायद इतनी बेरहमी वह किसी के साथ नहीं करता ।

यह देह देवालय, शिवालय है । यह शरीर भगवान का मन्दिर है । इसे शराब पीकर सुरालय, तम्बाकू आदि खाकर रोगालय और मांसादि खाकर इसे श्मशान या कब्रिस्तान नहीं बनाओ । ऋतूभुक्, मित्भुक् व हित्भुक् बनो । समय से, सात्विक, संतुलित व सम्पूर्ण आहार का सेवन कर शरीर को स्वस्थ बनाना चाहिए ।

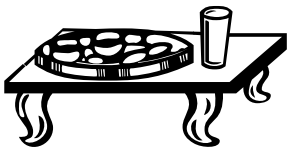

दाग कफन में

ए. साई बाबा
वरिष्ठ पुनरूत्पादक, द.मु.व.

जब तक रहे न जीने दिया सुकून से,
अब याद करके क्यों हमें सताते हो ।
न बाज आये जिन्दगी भर बेवफाई से,
अब और क्या हम पे सितम ढ़ाते हो ।
सोये हुए हैं हम बड़े चैन से,
अब क्यों हमें नींद से जगाते हो ।
न रहने दिया हमारे वजूद को,
अब और क्या इस खाक को मिटाते हो ।
जिन्दगी भर न किया ऐतबार हम पे,
अब इस लाश से क्या चाहते हो ।
तब भी हम बेबस थे लाचार थे,
अब इस बेजान से क्या चाहते हो ।
डोली हमारी सजी-सजाई है उठने को,
अब न रोको बेकार क्यों जोर लगाते हो ।
मत छूना हमें नहाए हुए हैं अभी के,
अब क्या दाग कोई कफ़न में लगाते हो ।

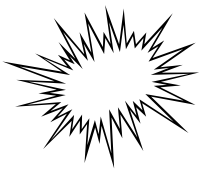

<u>क्या आप जानते हैं?</u>

टी.एन.वाटेकर
तकनीकी श्रमिक, द.मु.व.

1. दुनिया में ऐसा कौन सा देश है कि जहाँ मच्छर नहीं हैं ?
   - फ्रांस
2. दुनिया में कुल कितनी भाषाए एवं बोलियां बोली जाती है ?
   - 5000
3. भात के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का पूरा नाम क्या है ?
   - नरेन्द्र दामोदरदास मोदी
4. दुनिया मे ऐसा कौना शहर है कि जहाँ 5 सूरज चमकते हैं ।
   - सिंग नाश्थ्यू (चीन में)
5. दुनिया मे ऐसा कौन सा शहर है जहाँ आधी रात में मिडनाइट सूरज चमकता है ।
   - नार्वे
6. छत्रपति शिवाजी महाराज के गुरू (प्रशिक्षक) कौन थे ?
   - दादोजी कोडंदेव
7. महाभारत में दानवीर कर्ण से दान में कवच कुंडल किसने मांगा था ।
   - इंद्रदेव
8. ब्लैक गोल्ड सिटी कौनसे शहर को कहा जाता है ?
   - चंद्रपुर (महाराष्ट्र)
9. राट्रमंडल खेलों मे सर्वप्रथम स्वर्ण पदक हासिल करने वाले भारत के खिलाड़ी कौन हैं?
   - मिल्खा सिंह 1958 में
10. संयुक्त राट्रसंघ अधिवेशन में सर्वप्रथम हिन्दी भाषा में संबोधित करने वाले भारत के कौन से प्रधानमंत्री थे ?
    - श्री अटल बिहारी वाजपेयी
11. क्या आपको मालूम है कि हाथी के नवजात शिशु का वजन कितने कि.ग्रा. होता है ?
    - 100 कि.ग्रा. से 120 कि.ग्रा.

स्वदेशी से स्वावलम्बी भारत

बी.नन्द कुमारी
द.मु.व.

स्वदेशी उद्योग, स्वदेशी शिक्षा, स्वदेशी चिकित्सा, स्वदेशी तकनीकी, स्वदेशी ज्ञान, स्वदेशी खानपान, स्वदेशी भाषा, स्वदेशी वेशभूषा, एवं स्वदेश के स्वाभिमान के बिना विश्व का कोई भी देश महान नही बन सकता ।

हम प्रत्येक भारतीय को व सम्पूर्ण भारत को स्वदेशी से स्वावलम्बी बनाकर भारत को विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली देशों की श्रेणी में लाना चाहते हैं ।

हम शिक्षा एवं चिकित्सा की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं में स्वदेशी भाषा, स्वदेशी संस्कृति, भारतीय संस्कार, वैदिक ज्ञान से देश के स्वभिमान को भारतीय जन मानस में जाग्रत करके पूरे विश्व में भारत की एक आदर्श पहचान बनाना चाहते हैं । 1611 में मछलीपटनम मे एवं 11 जनवरी 1613 में सूरत में मुगल शासकों ने एक विदेशी कम्पनी को व्यापार करने का अधिकार दिया था जिसने धीरे-धीरे देश का शोषण करते हुए अपनी जड़ें मजबूत कर ली और बंगाल में सन 1757 में प्लासी का युद्ध जीतकर कर की उगाही शुरू कर दी । अपनी मक्कारी से सन 1773 में रेम्यूलेटरी एक्ट का महारा ले, भारत के बंगाल क्षेत्र से शासन आरम्भ कर दिया अर्थात एक विदेशी व्यापारी कम्पनी देखते देखते शासक बन गई । प्रथम विदशी कमानी 'ईस्ट इण्डिया' ने देश का सम्पूर्ण धन व वैभव को तो लूटा ही, साथ ही भारत को लगभग 200 वर्षो तक गुलाम भी बनाये रखा और अब तो देश मे लगभग 5000 से अधिक विदेशी कम्पनीया शून्य तकनीकी अर्थात जिस समान मे विशेष तकनीक अथवा विज्ञान का उपयोग नहीं होता, आटा, नमक, पानी, जूस, जूता, चप्पल एवं वस्त्र आदि बेचकर प्रतिवर्ष करोड़ों रुपया लूट रही हैं । देश का एक भी रुपया यदि विदेशी बैंको मे जमा होता है तो यह स्वदेशी मुद्रा भण्डार के लिये बहुत ही हानिकारक है। देश की अर्थ व्यवस्था ही, देश की सबसे बड़ी ताकत है । हम देश को ताकतवर बनायेंगे। हमें देश को धोखा नहीं देना है । हमें देश का जिम्मेदार व वफादार नागरिक एव व्यापारी बनना है ।

हम यह प्रतिज्ञा करें कि हम विदेशी कम्पनियों द्वारा निर्मित सामान का सेवन जीवन में कभी भी नही करेंगे । आज भारतीय स्वदेशी कम्पनियाँ भी हमारे दैनिक जीवन मे उपयोग मे आने वाली वस्तुओं का शुद्धता व गुणवत्ता के साथ उत्पादन कर रही हैं । अतः स्वदेशी को अपनाकर हमें देश को आर्थिक गुलामी से बचाना है व स्वदेशी उद्योगों को बढ़ाकर गरीबी, बरोजगारी व भूख से मुक्त सशक्त भारत बनाना है ।

जब भारत की उन्नित का इतिहास लिखा जाये, तब देश को कमजोर बनाने वालों में कम से कम हमारी गणना न हो अपितु देश को ताकत देने वालों में हमारा नाम आये। तब हमारा नाम देशद्रोहियों में नहीं परन्तु स्वदेशी का उपयोग करने वाले देश प्रेमियों में लिखा जायेगा ।

धर्म

एल.वी.एस.राजू के.
वरिष्ठ पुनरुत्पादक, द.मु.व.

सार्वभौमिक व वैज्ञानिक सत्य ही सार्वभौमिक धर्म है । जो सार्वभौमिक व वैज्ञानिक मापदण्डों पर खरा नहीं उतरता वह धर्म नहीं, भ्रम है । मैं धार्मिक हूँ, धर्मान्ध नहीं । मैं धर्म को धन्धा व कर्म को गन्दा नहीं बनाऊँगा ।

श्रेष्ठ आचरण का नाम ही धर्म है । धर्म मात्र प्रतीकात्मक नहीं आचरणात्मक है । शिखा सूत्र व अन्य धार्मिक प्रतीकों के भी मूल में आचरण ही प्रधान है । आचारहीन प्रतीकात्मक धर्म से भ्रम या धर्मान्धता पैदा होती है । अतः हम धार्मिक बनें धर्मान्ध नहीं।

मै धर्म परिवर्तन में विश्वास नहीं करता । अहिंसा, सत्य, प्रेम, करुणा, वात्सल्य, सेवा, संयम व सदाचार आदि जीवन का श्रेष्ठ आचरण ही धर्म है । और ये सभी आचरणात्मक गुण, सभी धर्मो में हैं । अतः धर्म में परिवर्तन जैसा कुछ है ही नहीं । धर्म तो धारण करने योग्य जीवन की श्रेष्ठ मर्यादाएं हैं । विद्यालय या चिकित्सालय चलाकर लोगों को धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करने को मैं उचित नहीं मानता क्योंकि मैने भी सभी वर्ग व मजहबों के करोड़ो लोगों के जीवन में परिवर्तन देखा है । उनको आरोग्य होते देखा है, मौत के करीब पहुँच चुके लोगों को बचते हुए देखा है, परन्तु एक भी व्यक्ति ने धर्म या मजहब नहीं बदला ।

पिता का कर्तव्य

कुमार स्वामी
वरिष्ठ पुनरुत्पादक, द.मु.व.

एक बार एक पिता एक संत के पास गया । उसने उन्हें प्रणाम कर कहा मैने बहुत मेहनत से ढ़ेर सारी संपत्ति जमा की है । पर मेरा इकलौता पुत्र उसे अपनी बुरी आदतों पर लुटा रहा है। मुझे अपने बेटे के भविष्य की चिंता सताती है । यदि वह अभी से मेरी गाढ़ी कमाई को व्यर्थ गंवाएगा तो आगे क्या होगा ? इस पर संत ने पूछा, 'क्या तुम्हारे पिता ने भी तुम्हारे लिए संपत्ति जोड़ी थी? सेठ बोला, नहीं, मेरे पिता तो बेहद गरीब थे । बचपन में मुझे दो वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल से मिल पाती थी । इस पर संत ने कहा, इसके बावजूद तुम इतने धनवान हो । यह धन तुमने अपनी मेहनत से एकत्र किया है । लेकिन तुमने अपनी सारी शक्ति केवल धन एकत्र करने पर खर्च की । अरे भाई, धन तो आनी-जानी चीज है । यदि तुमने अपने बेटे को अच्छे संस्कार देने पर थोड़ी भी ऊर्जा खर्च की होती तो तुम्हें यह चिंता ही न सताती कि तुम्हारा धन व्यर्थ जा रहा है । तुमने धन कमाने की कला तो जान ली किंतु बच्चे को अच्छा मनुष्य बनाने की कला न सिखा सके । यदि उसे समय पर हर चीज की अच्छाई-बुराई से परिचित कराते तो वह दुर्गुणों का शिकार नहीं होता ।

एक पिता का सर्वप्रथम कर्तव्य यह है कि वह अपनी संतान को पहली पंक्ति में बैठने योग्य बना दे । बाकी सब कुछ वह अपनी योग्यता के बूते हासिल कर लेगा । संत की इस बात से सेठ की आँखे खुल गई और उसने अपने बेटे को सही रास्ते पर लाने का निर्णय किया ।

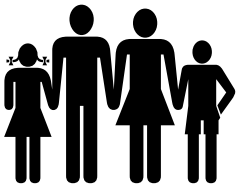

जीवन की सीख

एम. वेंकटरमणा
एल.एम.पी. ग्रेड-II, द.मु.व.

मानव जीवन फिर ना मिलेगा तू मुस्कुराना सीख ले ।
प्यार से दूसरों को तू अपना बनाना सीख ले ।।

इस पथरीले पथ पर तू चलना सीख ले ।
राह पर कांटे बिछे हैं तू साफ करना सीख ले ।।

यह मानव जीवन अमूल्य है उसको संवारना सीख ले ।
दुःख दर्द को भुलाकर तू प्यार करना सीख ले ।।

बुरे कर्मों को छोड़कर तू अच्छे कर्म करना सीख ले ।
दूसरों के दुःख दर्द को तू अपना बनाना सीख ले ।।

द्वेष, भेद-भाव, जाति-पांति को छोड़कर संगठित होना सीख ले ।
झूठ, बेईमानी, अत्याचार को छोड़कर सच्चाई से जीना सीख ले ।।

मानव जीवन फिर ना मिलेगा, तू मुस्कुराना सीख ले ।
प्यार से दूसरों को तू अपना बनाना सीख ले ।।

नशों के व्यापारी लाखों निर्दोष लोगों की मौत के गुनहगार

जी.वी.एस.धनलक्ष्मी
रिटचर ग्रेड-II, द.मु.व.

मद्यपन को प्रोत्साहन देना मानवीय अधिकारों का अथवा स्वतंत्रता का संरक्षण नहीं, अपितु पशुता के अधिकारों का संरक्षण है । क्योंकि शराब पीकर व्यक्ति विवेकशून्य हो जाता है और मननशील एवं विवेकशील होने से ही व्यक्ति मनुष्य कहलाता है । शराब मनुष्य को जड़, मूढ़ एवं पशुवत् बना देती है । अतः शराब को संरक्षण एवं प्रोत्साहन देना, नशा करना, नशे का साधन उपलब्ध करवाना - ये तीनों ही कार्य तथ्य, तर्क, जमीनी हकीकत एवं मानवीय मूल्यों के आधार पर नैतिक व सामाजिक अपराध की श्रेणी में आते हैं ।

क्या कोई भी सभ्य माता-पिता चाहते हैं कि उनकी जवान बेटी आवारा लड़कों के साथ पबों में शराब, सिगरेट व नशे मे धुत्त होकर चरित्रहीन, मनचले व उद्दण्ड लड़कों के साथ अश्लीलता करे, दुराचार करे । क्या कोई सिगरेट व शराब आदि नशों का व्यापार करने वाला पिता ये चाहता है कि उसके मासूम बच्चे नशों के विनाशकारी कुचक्र में फंसकर, अपना जीवन व जवानी बर्बाद करें । नशों में फंसा हुआ इंसान भी अपने बच्चों को नशे से बचाना चाहता है । चोर, दुराचारी व व्यभिचारी व्यक्ति भी चाहता है कि उसके बच्चे बेईमान, चोर व चरित्रहीन न हों ।

नशा-शराब तो एक सामाजिक अपराध एवं सर्वनाश की जड है । शराब, तम्बाकू आदि नशा कामुकता, दुराचार, व्यभिचार, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार, अपसंस्कृति, हिंसा, अपराध, पारिवारिक विनाश एवं लीवर रोगों - सिरोसिस ऑफ लीवर, लीवर कैंसर, किडनी रोगों, हृदय रोगों तथा टी.बी. आदि प्राणदातक बीमारियों का मुख्य कारण है । भारत में प्रतिवर्ष शराब एव तम्बाकू आदि नशीली वस्तुओं के प्रयोग के कारण से 5 लाख लोग लीवर सिरोसिस, किडनी फेलियर एवं कैंसर आदि रोगों के शिकार होकर मरते हैं । ऐसे लाखों लोगों की बेगुनाह मौत का कारण शराब, तम्बाकू आदि का व्यापार करने वाले प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से इसके भागीदार हैं । जब अमेरिका जैसे विकसित देश मे तम्बाकू, शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन करके बीमार हुए लोगों के उपचार के लिए नशा विक्रेताओं के ऊपर 5 हजार करोड़ का जुर्माना किया जा सकता है और 148 लोगों की हत्या के आरोप में जब सद्दाम को फाँसी पर चढ़ाया जा सकता है तो क्यों न इन लाखों देशवासियों की मौत के गुनहगार या प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से करोडों लोगों की जिन्दगी, घर, परिवार एवं बच्चों के विनाश के लिए जिम्मेदार इन नशा व्यापारियों, शराब, माफिया ओं पर हत्या के मुकदमें चलने चाहिए और इनको सलाखों के पीछे रखना चाहिए अथवा फाँसी पर लटकाना चाहिए ।

कविताएँ

टी.एन.वाटेकर
तकनीकी श्रमिक, द.मु.व.

गुरू ही है ईश्वर

गुरू ही है ईश्वर,
गुरू ही है ज्ञान,
गुरू ही है प्रकाश,
गुरू ही है विद्या ।

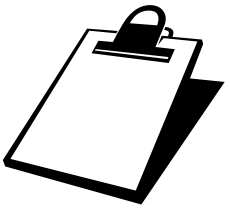

गुरू ही है मार्ग दर्शक,
गुरू ही है शुभदायक,
गुरू ही है प्रेरणादायक,
गुरू ही है कल्याणकारी ।

गूरू ही है चिन्ता निवारक,
गुरू ही है कष्ट निवारक,
गूरू ही है आनन्द दायक,
गुरू ही है महान ।

मंत्री-नेता

आधिकारी और बाबू,
सभी मिलकर कर रहे हैं,
खुलकर भ्रष्टाचार,
फिर भी देखिये,
सब अपने को,
बतला रहे हैं,
हरिश्चन्द्र का अवतार ।

चिन्ता

एम.जी.बदकी
तकनीकी श्रमिक, द.मु.व.

वीरों को	-	आन की
किसानों को	-	धान की
नाविक को	-	तूफान की
नेता को	-	मतदान की
यात्री को	-	सामान की
भगवान को	-	भक्तों की
पिता को	-	संतान की
भिखारी को	-	दान की
अमीर को	-	शान की
कायर को	-	जान की
गायक को	-	सुरों की
कमजोर को	-	बलवान की
विद्यार्थी को	-	परीक्षा की
व्यापारी को	-	नुकसान की
पंछी को	-	उड़ान की
वक्ता को	-	व्याख्यान की
गुरू को	-	ज्ञान की
दुःखी को	-	आनंद की
कंजूस को	-	मेहमान की

चिन्ता सताती है ।

भारत के राष्ट्रीय प्रतीक

एम. रामय्या
प्रिन्टर मैकेनिक, द.मु.व.

भारत का राष्ट्रीय ध्वज	-	तिरंगा
भारत का राष्ट्रीय गान	-	जन-गण-मन
भारत का राष्ट्रीय गीत	-	वन्दे मातरम्
भारत का राष्ट्रीय चिन्ह	-	अशोक स्तम्भ
भारत का राष्ट्रीय पंचांग	-	शक सम्वत्
भारत का राष्ट्रीय वाक्य	-	सत्यमेव जयते
भारत की राष्ट्रीयता	-	भारतीय
भारत की राज भाषा	-	हिन्दी
भारत की राष्ट्रीय लिपि	-	देवनागरी
भारत का राष्ट्रीय ध्वज गीत	-	हिन्द देश का प्यारा झंडा
भारत का राष्ट्रीय नारा	-	श्रमेव जयते
भारत के राष्ट्र पिता	-	महात्मा गाँधी
भारत का राष्ट्रीय पुरस्कार	-	भारत रत्न
भारत का राष्ट्रीय सूचना पत्र	-	श्वेत पत्र
भारत का राष्ट्रीय वृक्ष	-	पीपल
भारत की राष्ट्रीय मुद्रा	-	रुपया
भारत की राष्ट्रीय नदी	-	गंगा
भारत का राष्ट्रीय पक्षी	-	मोर
भारत का राष्ट्रीय पशु	-	बाघ
भारत का राष्ट्रीय फूल	-	कमल
भारत का राष्ट्रीय योजना	-	पंचवर्षीय योजना
भारत का राष्ट्रीय खेल	-	हॉकी
भारत की राष्ट्रीय मिठाई	-	जलेबी
भारत के राष्ट्रीय पर्व	-	26 जनवरी (गणतन्त्र दिवस) 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस)

कोशिश करें

अमित अधिकारी
प्रबंधक (कनिष्ठ), द.मु.व.

मेरा यह सन्देश उन सभी साथियों को है जो हिन्दी भाषी क्षेत्र से नहीं हैं या फिर हिन्दी भाषी क्षेत्र से हैं मगर हिन्दी में कार्य करने में झिझकते हैं । अक्सर यह देखा गया है कि मुख्यतः जो लोग अहिन्दी भाषी क्षेत्र से हैं वह हिन्दी में कार्य करने में कठिनाई महसूस करते हैं । ऐसा नहीं कि वो हिन्दी में काम नहीं कर सकते पर उतने दक्ष नहीं हैं। लेकिन मेरा ऐसा मानना है कि कोई भी इन्सान जन्म से किसी भी क्षेत्र मे दक्ष नहीं होता। हर एक इन्सान अपनी गलतियों से ही सीखता है और आगे बढता है ।

इसलिए मेरा अपने सभी माथियों से अनुरोध हैं कि गलतियों की परवाह किए बिना जितना कुछ हिन्दी में कार्य कर सकते हैं व हिन्दी के विकास में समर्पित भाव से योगदान दे सकते हैं, अवश्य दीजिए । इस देश की राजभाषा में कार्य करना अपने आप मे एक बहुत बड़े गर्व की बात है एवं यह भी एक तरह से देश सेवा ही है ।

जय हिन्दी! **जय भारत!**

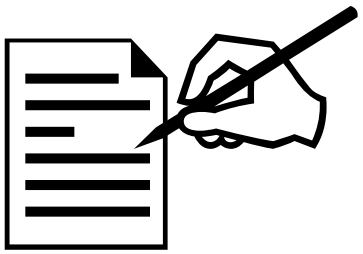

दक्षिणी मुद्रण वर्ग के आधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम

सर्व श्री. जे. सुधाकर, बी. एस.एस. शास्त्री व बी. वी. रामन्ना द्वारा प्रस्तुति की झलक

बिरला मंदिर 1966, हैदराबाद

दक्षिणी मुद्रण वर्ग, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, उप्पल, हैदराबाद में मुद्रित